D.El.Ed. IInd Sem

Subject :- S.St

Topic :- शैलो का आर्थिक महत्त्व

शैलो के आर्थिक महत्त्व का अध्ययन निम्नलिखित शीर्षको के अन्तर्गत किया जा सकता है —

1. कृषि एवं पशुपालन के क्षेत्र मे

उपजाऊ मिट्टी कृषि का प्रमुख आधार है। मिट्टी का निर्माण एवं उर्वरता शैलो की संरचना पर ही निर्भर करती है। विभिन्न प्रकार की मिट्टियो मे विविध प्रकार की फसले उगाई जाती है। अन्न-फल एवं सब्जियाँ, वस्त्रो के लिए रेशेदार फसलो तथा उत्तम पेय पदार्थ चट्टानो से निर्मित मिट्टी मे ही उगाए जाते है।

2. इमारती पत्थर एवं भवन-निर्माण के क्षेत्र मे

शैलो से भवन निर्माण के लिए मूल्यवान पत्थर, सीमेण्ट, चूना, लोहा प्राप्त होता है। आगरा का विश्व प्रसिद्ध ताजमहल बहुमूल्य संगमरमर (कायान्तरित शैल) के पत्थरो से ही निर्मित है। विशाल एवं अल्प भवनो के निर्माण मे मिट्टी, लोहा, बजरी एवं सीमेण्ट का ही प्रयोग किया जाता है, जो विभिन्न प्रकार की शैलो से ही प्राप्त होते है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

3. उद्योगो के प्रोत्साहन के क्षेत्र मे

शैलो से उद्योग धन्धो के लिए अनेक कच्चे माल उपलब्ध होते है। लोहा, इस्पात, सीमेण्ट, कांच तथा रासायनिक उद्योग मुख्यत: शैलो से प्राप्त खनिज पदार्थों पर ही निर्भर करते है। इसलिए शैलो को आधुनिक युग मे उद्योगो की आधारशिला कहा जाता है।

4. बहुमूल्य खनिज पदार्थों के क्षे० मे -

शैलो के अन्तर्गत ही अनेक बहुमूल्य एवं उपयोगी खनिज पदार्थो का निर्माण होता है। शैल मूल्यवान खनिजो के अपार भण्डार होती है। इनमे सोना, हीरा, तांबा, मैगनीज, अभ्रक आदि खनिजो की उत्पत्ति होती है। इसी कारण वर्तमान युग मे खनिज पदार्थ किसी राष्ट्र के बहुमुखी विकास एवं आर्थिक समृद्धि के मापदण्ड माने जाते है।

5 शक्ति संसाधनो के स्रोत

शैलो से ही कोयला, खनिज तेल तथा आणविक शक्ति के लिए यूरेनियम, थोरियम आदि खनिज पदार्थ होते है। ये संसाधन परिवहन एवं उद्योगो को गति प्रदान करते है। इस प्रकार परोक्ष रूप मे किसी भी राष्ट्र की आर्थिक प्रगति पूर्ण रूप से शैलो पर ही निर्भर करती है।

Thankyou

by
Mr. Parveen Raj
Asss. Prof.
B.R.C. Deoband.